मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : एक अनुशीलन

			पृष्ठांक
अध्याय 1·	:	असंगत नाटक : सैद्धान्तिक विवेचन	1 - 26
अध्याय 2·	:	हिन्दी के असंगत नाटक और मुद्राराक्षस	27 - 53
अध्याय 3·	:	मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : विसंगत जीवन-बोध	54 - 92
अध्याय 4·	:	मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य	93 - 118
अध्याय 5·	:	मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : नाट्य-शिल्प	119 - 164
अध्याय 6·	:	मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : रंगमंचीय आयाम	165 - 210
अध्याय 7·	:	मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : समन्वित मूल्यांकन	211 - 216

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : एक अनुशीलन

अ नु क्र म णि का

पृष्ठांक

अध्याय 1· : असंगत नाटक : सैद्धान्तिक विवेचन 1 - 26

भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : विभिन्न प्रवृत्तियाँ

असंगत शब्द प्रयोग

असंगति जीवन का अविभाज्य हिस्सा

असंगति : मनोवैज्ञानिक आधार

असंगत नाटक से अभिप्राय

असंगत नाटक और परम्परागत नाटक

पाश्चात्य एब्सर्ड नाट्य परम्परा

हिन्दी के असंगत नाटक : पाश्चात्य प्रभाव

असंगत नाटक : भारतीय परिप्रेक्ष्य में

असंगत नाटक सैद्धान्तिक विवेचन

कथ्य, चरित्र-सृष्टि, भाषिक और संवादीय संरचना, प्रतीक और बिम्ब विधान, रंगमंचीय आयाम, उद्देश्य।

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय 2· : हिन्दी के असंगत नाटक और मुद्राराक्षस 27 - 53

भूमिका

हिन्दी के असंगत नाटककार और उनके नाटक

भुवनेश्वर प्रसाद, विपिनकुमार अग्रवाल, डॉ·लक्ष्मीकांत वर्मा, डॉ·शम्भूनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, मणि मधुकर, डॉ·सत्यवत

सिन्हा, डॉ·लक्ष्मीनारायण लाल, राजकमल चौधरी, बृजमोहन शाह,
रमेश बक्षी, रामेश्वर प्रेम, सुदर्शन मजीठिया, हमीदुला, शांति
मेहरोत्रा, अन्य नाटककार।

मुद्राराक्षस और उनके असंगत नाटक

व्यक्तित्त्व, कृतित्त्व

गौण असंगत नाटक

संतोला, गुफायें।

प्रमुख असंगत नाटक

मरजीवा, योर्स फेथफुली, तिलचट्टा, तेन्दुआ।

शोध कार्य की दिशायें

1·विसंगत जीवन-बोध, 2·मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, 3·नाट्य-
शिल्प, 4·रंगमंचीय आयाम।

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय 3· : मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : विसंगत जीवन-बोध 54 - 92

भूमिका

विसंगत जीवन-बोध के विभिन्न रूप

1·रक्षक या भक्षक, 2·मनुष्य और पशुता, 3·नैतिकता के नये
प्रतिमान, 4·आर्थिक विपन्नता, 5·परवशता और यांत्रिकता,
6·बौद्धिक नपुंसकता, 7·द्विपक्षीय संदिग्धियाँ,
8·विद्रोह, विडम्बना और व्यंग्य बोध के विविध आयाम -

विद्रोह, विडम्बना और व्यंग्य-बोध -

1·शासन-व्यवस्था, 2·पुलिस व्यवस्था, 3·न्याय व्यवस्था,
4·आधुनिक शिक्षा और बुद्धिजीवी वर्ग, 5·निम्न
और उच्च वर्ग की स्थिति, 6·जनसंख्या, 7·मातमपुर्सी
और शोक-समाचार, 8·सरकारी कार्यनीति, 9·अन्य आयाम।

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय 4· : मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य 93 - 118

भूमिका

मनोविज्ञान परिभाषा और महत्त्व

असंगत नाटक और मनोविज्ञान

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक और मनोविज्ञान

विभिन्न मनोविकार

1·क्रोध, 2·भय, 3·संत्रास, 4·चिंता, 5·हँसी, 6·संशय,

7· ईर्ष्या, 8·घृणा।

विभिन्न मनोविकृतियाँ

अ· दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ

ब· मनोविक्षिप्तता

क· लैंगिक विकृतियाँ

1·परपीड़न, 2·स्वपीड़न, 3·प्रतिजातीय वस्त्रधारण

आसक्ति, 4·स्पर्श आसक्ति, 5·नग्नतादर्शन आसक्ति,

6·पुरुषभाव प्रतिमा, 7·शवकामुकता, 8·अकामुकता

या नपुंसकता, 9·अतिकामुकता, 10·पशुकामुकता।

मनोरचनाएँ या रक्षा युक्तियाँ

1·दमन, 2·संक्षिप्तीकरण, 3·विस्थापन, 4·अन्तःक्षेपण,

5·क्षतिपूर्ति, 6·वास्तविकता से पलायन।

मनोविज्ञान के अन्य आयाम

स्वप्न मनोविज्ञान

देव का स्वप्न, केशी का स्वप्न, स्वप्नों के प्रकार।

भीड़ का मनोविज्ञान

फैशन का मनोविज्ञान

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय 5· : मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : नाट्य-शिल्प 119 - 164

भूमिका

1· वस्तुविन्यास

2· पात्र और चरित्र-चित्रण

पात्रों की संख्या, पात्रों का वर्गीकरण, मुद्राराक्षस के पात्रों की विशेषताएँ, चरित्र-चित्रण की विधियाँ,

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : चरित्र-चित्रण की विधियाँ

1·साक्षात शैली - अ·नाटककार द्वारा ब·पात्र द्वारा

2·परोक्ष शैली, 3·सांकेतिक शैली,

4·अभिनयात्मक शैली - अ·पात्रों के क्रिया-कलाप द्वारा

ब·संवाद या कथोपकथन द्वारा

5·मनोवैज्ञानिक शैली, 6·व्यंग्यात्मक शैली,

7·पूर्वदीप्ति शैली।

3· संवाद शिल्प

1·संबोधनहीन संवाद, 2·टूटे-फूटे अधूरे संवाद, 3·संक्षिप्त और नपे-तुले संवाद, 4·यांत्रिक 5·अप्रत्याशित संवाद 6·संवादों में संवाद, 7·संवादों की पुनरावृत्ति, 8·संवादो द्वारा वातावरण निर्मिति, 9·अतिनाटकीय संवाद, 10·संवादों का परपीड़न रतिमूलक प्रयोग, 11·संवादों में मौन का प्रयोग 12·स्वगत या एकालाप, 13·संवादों में कोरस का प्रयोग।

4· भाषाशैली

1·हरकत की भाषा, 2·आम साहित्यिक अभिव्यक्ति की भाषा 3·हाशिएवाली भाषा, 4·मानवीय संवेदनाओं की भाषा, 5·अभिव्यक्ति का ठंडापन, 6·नंगे शब्दों का प्रयोग . 7·शब्द को अर्थ से अलग करने की प्रवृत्ति, 8· शरीर यातना की भाषा 9·वाक्य विन्यास की विभिन्न प्रवृत्तियाँ -

अ·छोटे वाक्यों का प्रयोग, ब·रिक्तिसूचक बिन्दु चिह्नों से युक्त वाक्यों का प्रयोग, क·अधूरे वाक्यों का प्रयोग,

ड·वाक्य-विन्यास में विलोपन और विखंडन, इ·लंबे
वाक्यों का प्रयोग, ई·प्रश्नवाचक वाक्यों का प्रयोग।

10·शब्द-चयन की प्रवृत्तियाँ-

अ·बोलचाल के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग, ब·अंग्रेजी
शब्दों की भरमार, क·अन्य भाषाओं के शब्द- अरबी
शब्द, फारसी शब्द, संस्कृत शब्द, ड·अपशब्दों के प्रति
आग्रह, 11·मुहावरों का प्रयोग।

5· गीत एवं संगीत योजना

6· बिम्ब एवं प्रतीक योजना

बिम्ब योजना, प्रतीक योजना।

7· शीर्षकों के अभिनव प्रयोग

निष्कर्ष।

पृष्ठांक

अध्याय 6· : मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : रंगमंचीय आयाम 165 - 210

भूमिका

नाटक और रंगमंच

रंगमंच

रंगमंचीय उपकरण

1·मंच-सज्जा

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : मंच-सज्जा

2·वेशभूषा तथा रूप-विन्यास

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : वेशभूषा तथा रूप-विन्यास

3·पात्रों का क्रिया-व्यापार

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : पात्रों का क्रिया-व्यापार

1·अफसरशाही के जुल्म, 2·राजनीति की भ्रष्ट स्थिति,
3·आतंक और खूंखारपन, 4·प्रेम और यौन विकृति
5·मनोविकृत स्वप्न, 6·विसंगत यांत्रिक जीवन, 7·मृत्युबोध

8· मूक क्रिया-व्यापार

4·ध्वनि-प्रकाश योजना

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : ध्वनि-प्रकाश योजना

5·दर्शकीय और पाठकीय संवेदनाएँ

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : दर्शकीय और पाठकीय संवेदनाएँ

निष्कर्ष।

पृष्ठांक

अध्याय 7· : मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : समन्वित मूल्यांकन। 211 - 216

संदर्भ ग्रंथ सूची 217 - 221